

मत बोलो 4. उत्कृष्ट, श्रेष्ठ जैसे- आपके ऊँचे विचार हैं)

**ऊँछना सं.क्रि.** (तद्.) 1. बीनना 2. बालों को कंधी से संवारना, झाड़ना।

**ऊँट पुं.** (तद्.) पीठ पर कूबड़ वाला एक ऊँचा चौपाया, जो सवारी या बोझ लादने के काम आता है और प्रायः रेगिस्तानी क्षेत्रों में पाया जाता है मुहा. ऊँट किस करवट बैठता है- मामला किस प्रकार निबटता है, क्या परिणाम निकलता है; ऊँट की कौन-सी कल सीधी-बेढंगे व्यक्ति का हर काम बेढंगा होना; ऊँट की चोरी और झुके-झुके- छिप न सकने वाली बात को छिपाने का यत्न, ऊँट के मुँह में जीरा-अधिक आवश्यकता के विपरीत स्वल्प सामग्री की व्यवस्था।

**ऊँट कटारा पुं.** (तद्.) ऊँट के खाने की कँटीली झाड़ी जो वह चबाकर खाता है।

**ऊँट गाड़ी स्त्री.** (देश.) ऊँट द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी।

**ऊँट नाल पुं.** (देश.) ऊँट की पीठ पर बैठकर चलायी जाने वाली तोप या अस्त्र।

**ऊँटरा पुं.** (तद्.) बैलगाड़ी को खड़ा करने के लिए उसके आगे के हिस्से के नीचे लगाई जाने वाली लकड़ी की टेक।

**ऊँटवान पुं.** (तद्.) 1. ऊँट चलाने वाला, ऊँट वाहक, ऊँट का स्वामी, मालिक।

**ऊँधा पुं** (देश.) 1. ढलुवाँ किनारा 2. चौपायों के पानी पीने का घाट।

**ऊँहूँ अव्य.** (देश.) अस्वीकृति सूचक शब्द, नहीं, ऐसा मत करो का सूचक, ये क्या कर दिया का सूचक।

**ऊ पुं.** (तत्.) 1. शिव, महादेव, चन्द्रमा 2. (अवधी, ब्रज, बुंदेली में ) इस का अर्थ "वह" जैसे- ऊ गया, ऊ से कहो 3. देवनागरी वर्णमाला का छठा स्वर जो ओष्ठ्य स्वर है 4. बुलावा, अनुकंपा और रक्षा व्यंजक (सूचक) स्वर (अव्य.) 5. कष्ट, वेदना सूचक स्वर।

**ऊ ऊ स्त्री.** (अनु.) 1. रोने की अवस्था में मुँह से निकलने वाली एक विशेष प्रकार की ध्वनि 2. धीमी आवाज में रुक-रुक कर होने वाली रोने की विशेष ध्वनि जैसे- वह बहुत दुखी होकर 'ऊ ऊ' की आवाज करता हुआ रो रहा है।

**ऊकार पुं** (तत्.) 'ऊ' स्वर।

**ऊकारांत वि.** (तत्.) [ऊकार+अंत] ऊकार है अंत में जिसके (ऐसा कोई शब्द) जैसे- उपजाऊ, जनेऊ आदि, वह शब्द जिसके अंत में ऊकार हो। ऊ पर समाप्त होने वाला शब्द।

**ऊकारादि पुं.** (तत्.) [ऊकार+आदि] 1. ऊकार आदि (वर्ण) 2. वि. 'ऊकार' है आदि में जिसके ऐसा कोई शब्द. जैसे- ऊर्जा, ऊर्ध्व।

**ऊख पुं.** (तद्.) 1. खेतों में प्रायः मई-जून में बोये जाने वाले पौधे जो लंबे तथा लंबी हरी पत्तियों वाले काष्ठीय त्वचा से युक्त तथा मीठे रस वाले, जो 'चूसने के भी काम आते हैं तथा इनके रस को पकाकर गुड़ व चीनी भी बनाई जाती है 2. गन्ना, ईख, इक्षु वि. उष्ण, गर्म, तप्त।

**ऊखटा/ऊखड़ वि.** (तद्.) पर्वत के नीचे की सूखी भूमि। भाभर।

**ऊखल पुं.** (तद्.) 1. लकड़ी या पत्थर का गहरा एक विशेष प्रकार का बरतन जिसमें धान आदि को मूसल से कूटा जाता है, ओखली 2. कांडी (स्त्री.) ऊखली।

**ऊखल पुं.** (तद्.) ओखली, ऊखली, जिसमें धान आदि अनाज कूटे जाते हैं।

**ऊखाणा पुं.** (तद्.) उपाख्यान, लोगों में परंपरा से चला आ रहा किसी विषय से संबंधित कोई प्रसिद्ध कथन 2. किंवदंती, लोकोक्ति, कहावत।

**ऊखिल वि.** (देश.) जो परिचित न हो, अपरिचित, अजनबी, 2. तिनका, 3. खटकने वाली वस्तु, कांटा।

**ऊखिलताई स्त्री.** (देश.) 1. अजनबीपन की स्थिति, अपरिचितता 2. अनमेल स्थिति।

**ऊगट पुं.** (तद्.) 1. शरीर की कांति बढ़ाने के लिए शरीर में लगाये जाने का उबटन 2. शरीर को